# गोवा विश्वविद्यालय

## शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला

## हिंदी अध्ययन शाखा

एच आई एन : HIN – ५२८

**भाषा और साहित्य: सामाजिक एवं सांस्कृतिक सर्वेक्षण**

विषय – रिपोर्ट

नाम : आरसी खातून

कक्षा : एम. ए. प्रथम वर्ष

सत्र ।।

12/20

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU
GOA

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1 | प्रस्तावना | 1-2 |
| 2 | सर्वेक्षण क्या है ? | 3-4 |
| 3 | नवशें गाँव | 5-6 |
| 4 | व्यवसाय और आर्थिक स्थिति | 7-9 |
| 5 | गाँव का पर्यावरण और अन्य समस्याएं | 10-12 |
| 6 | सुविधाएं | 13-14 |
| 7 | शिक्षा | 15-16 |
| 8 | हिंदी भाषा का ज्ञान | 17 |


Scanned with OKEN Scanner

| | | |
|---|---|---|
| 9 | संस्कृतिक जीवन | 18-21 |
| 10 | गाँव के लोगो की अपेक्षाएं | 22 -23 |
| 11 | निष्कर्ष | 24 |


Scanned with OKEN Scanner

# प्रस्तावना

सामाजिक सर्वेक्षण विषय , हमारे पाठ्यक्रम के अंतर्गत रखा गया सर्वेक्षण के लिए , इस सर्वेक्षण के लिए हमनेनावशें गांव को चुना गया इस सर्वेक्षण के दौरान जितना भी कुछ हमने किया है वह एक अलग ही अनुभव था आजकल के हमारे व्यस्त जीवन में यह विषय एक नया शिक्षा प्रदान किया इसमें हमें बहुत कुछ सोने समझने पर भी मजबूर किया।

जैसा हमारा पाठ्यक्रम इतना है तंग है कि हमें इस विषय ने हमें अपने क्लासरूम से बाहर एक अलग ही ढंग से कुछ नया सिखाए हमें ना कुछ सिर्फ सिखाए बल्कि हमें यह भी पता चला कि लोगों के बीच संवाद करने के बाद कैसा महसूस होता है के लोगका जीवन किस तरह व्यतीत करते है । इस पाठ्यक्रम में हमें मौका दिया कि हम लोगों के बीच जाकर उनकी समस्याएं उनके इच्छाएं उनके उम्मीदों को समझ सके।

हमें शुरुआत में काफी घबराहट हुई के हम कैसे अनजान लोगों के पास जाएंगे उनसे सवाल करेंगे और उनसे उनके गांव के बारे में जानकारी हासिल कर पाएंगे



Scanned with OKEN Scanner

हमने जाने से पहले कुछ सवाल को तैयार कर लिए थे , लेकिन वहां पहुंचने के बाद हमें उनके

जवाबों से कुछ और सवाल भी उत्पन्न हुए शुरुआत में डर था कि कुछ लोग हमें गांव के बारे में जानकारी देने से मानाकर देंगे और यह ऐसा शुरू में तो नहीं लेकिन कुछ  जगाओ में हुआ कुछ लोगों ने हमें काफी कुछ जानकारी दी पर कुछ लोग जानकारी देने से घबरा रहे थे ।

दिल में उत्सुकता तो जरूर थी  के कुछ नया करने जा रहे हैं पर हिचकीचाहट उतना ही । सब ने अपनी अपने सवारी लेकर उस जगह पर पोहचे।

फिर शुरुआत मे जब हम गए तो हम सोचने लगे क्या वहा के लोग हमें अपनी जानकारी देंगे जब हम वहां पहुंचे तो शुरू में एक इंसान ने काफी अच्छी और काफी महत्वपूर्ण जानकारी दि जिससे हमारे अंदर आत्मविश्वास जग के हमें सवाल पूछने में हिचकीचाहट नहीं होगी और जवाब भी जरूर मिलेगी और इसी तरह हमने अपने सर्वेक्षण की सफर तय कीया।



Scanned with OKEN Scanner

## सर्वेक्षण क्या है

सर्वेक्षण एक एसी विधा है जिसमे एक चुनिंदा जगह को ले कर एक पे जानकारी हासिल की जाति है , वाह जानकारी आम लोगो से बात चीत कर के प्राप्त होती है ।

## सर्वेक्षण की पप्रक्रिय

सर्वेक्षण करने के लिए एक जगह निर्धारित की जानी है और उस जगह के अनुसार और अपने विषय के अनुसार सवाल को तैयार कर लिया जाता है, जगह पर मौजूद हो कर हर घर मर हर चलते फिरते वहा के लोगो से उन सवालों का जवाब मांगते है और उनकी बातो को समझ कर जान कर एक रिपोट तैयार की जाति है जिसमे सबके समान जवाबो को लिखा जाता है और समझा जाता है ।



Scanned with OKEN Scanner

## सर्वेक्षण की क्या और कयो जरूरत

सर्वेक्षण वह माध्यम है जिसके द्‌वारा हमें ज्ञात होता है के के किन किन जगाहो पर किस चीज़ की सुविधा उपलब्ध है , किस चीज़ की कमी है , किसी बात का ले कर शोषन तो नही किया जा रहा , उनकी कैन सै मांगे है कैन सी आपकेशाये है ।



Scanned with OKEN Scanner

# नवशें गांव

गांव शब्द सुनते ही हमारे मश्तिक मे एक हि ख्याल आता है। हरी भारी खेती , जानवर चरते हुए , किसान धूप मे खेती करते ,कुछ मिट्टी के समान वाले बर्तन ले जाते हुए कोई बकरिया चरते हुए ,मिटते के घर कच्ची सडक जिस पे बैल गाड़ी गुजरती हुई और कुछ सायिकिल चलाते हुए ।कुछ इस तरह हमारे नज़र के सामने आती है जैसे हि हम गाँव का नाम सुनते है तो ।

लेकिन जैसे की हम जानते है के देश बदल रहा है तो सब कुछ बदलेगा और इसी के साथ हमारा जो गाँव देखने का जो नाज़रया है वो भी बदल गया जब हम अपने पतयक्रम के लिए नवशें गांव को चुने नौशे गांव में पक्की सदके और अच्छी खासी जिंदगी जीने वाले लोग जिनके पास हर सुविधा उपलब्ध थी वह एक नदी के किनारे बसा हुआ था लोगों का खान पान रहन-सहन सब कुछशहरी जीशंत् की तरह था जब हम उसे गांव में पहुंचे तो देखें की यह गाँव तो गाँव लग हि नही रहा यहा के हर घर मे ऐसी ,फनका ,टी.वी और सब से ज़ादा महत्वपूर्ण मोबाइल फोन जो सबके हाथों मे था ।



Scanned with OKEN Scanner

गाँव मे लोग सब बड़ी बड़ी गाड़ियों से आते जाते है सब के घर आलिशान बने हुए थे यह गाँव हमारे गोंवा विश्वविद्यालय से कुछ दूरी मे पड़ती है। वहा की जनसंख्या लगबाग़ 400 से 500 तक के करीब है, जैसे की वह जगह नवशें नदी के पास है तो जाहिर है के उनका व्यवसाय मच्छी बचने से होगी ।

खूबसूरत दृश्य देखने काफी मिली , वहा की ठंडी हवा गर्मी के दिनों मे एसा महसूस करवाती है जैसे मानो के शंत नदी के किनारे गर्मी की छुट्टीया मना ने आये हो वहा के वातावरण मे ठंडी हवा लेकिन काफी गर्मी , उस गाँव के लोग बोहोत हि नाराम स्वभाव और दिलदारी है।



Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

## नवशें गाँव का व्यवसाए और आर्थिक स्थिति

जैसे के हम सब जानते गोवा में मछली पकड़ना एक प्रमुख और आवासीय व्यवसाय है। गोवा के तटीय क्षेत्रों में मछली पकड़ने के लिए बहुत सारे नौकरी का मौका होता है। मछली पकड़ने के लिए लोग मछली के जाल बिछाने, जालों को संभालने और मछली को बेचने में संलग्न होते हैं।

यह व्यवसाय स्थानीय लोगों के लिए महत्वपूर्ण आय का स्रोत है और इसका महत्व पर्यटन क्षेत्र में भी है। गोवा के तटीय क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की मछली जैसे की सर्दी, रावस, बंगड़ा, ट्रावेली, खारे, टिगर प्रॉन, और क्रैब प्राप्त हो सकती है। यहां पर्यटन के साथ-साथ मछली पकड़ने का धंधा भी बड़ा महत्व रखता है।

कुछ इसी तरह नवशें गाँव भी व्यवसाय का मुख्यता मछली पकड़ना है। लेकिन जैसे की पता है के गाँव अब गाँव नही रहा और अब सब का व्यवसाय सरकारी नौकरी मे तब्दील हो चुकी है।



Scanned with OKEN Scanner

नवशें गाँव के अधिक तर लोगों के पास सरकरी नौकरी मौजूद है लेकिन उस गाँव मे अब भी काफी लोग है जो मछली बेच कर अपने और अपने परिवार का पेट को पालते है ।

एक् शनु कोन्कन्कर् नामक् ने बतया के नवशें गाँव के कितने लोगो की मछली पकड़ने की नौकरी जा चुकी है। उनसे कहा तो गया के उन्हे दुसरे नौकरी दे दी जाएगी लेकिन जब वे नौकरी के लिए जाते है तो उन्हे फ़ौरन नौकरी से निकाल दिया जाता है क्युकी वे ज़िंदगी मे सिर्फ मछली पकड़ने का काम करते आये है और दूसरे कामो मे उनका उतना अनुबहव नही इस वजह से उन्हे निकाल दिया जाता है ।

और अगर मछली पकड़ने वाली नौकरी चली गयी तो ज़ादा तर लोगो के पास कोई दूसरा काम् नही रहेगा उनकि रोटी चीन ली जाएगी । लेकिन उस गाँव मे एक एसी बात है के अधिक तर घर मे सरकारी नौकरी वाले है तो वो उनके सहारे रहेंगे।



Scanned with OKEN Scanner

वहा के कुछ घरों मे दो तरह के व्यावसाय होने से अच्छी आमदनी तो आती है, पर जब मछली पकड़ नही पाते तो पैसो की थोड़ी सी कमी होती है। लेकिन गोवा जिस चीज़ के लिए मशहूर है उनकी वो ज़िंदगी छीन ली जाएगी।



Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

## नवशें मे पर्यावरण और अन्य समस्याएँ

पर्यावरण इंसानो से और इंसान पर्यावरण से जुड़े है आज जो हम खुली सहास ले रहे है और जो आरम की जिंदगी जी रहे है वो हमारे पर्यावरण की देन है । और हम जो दे रहे है वो केवल आरी कटारी और उनके जानो को नष्ट कर रहे है ,मना के वो बोल नही सकते इसि बात का फायदा उठाया जा रहा है ।

कुछ इसी तरह नवशें गाँव मे सारे पेड़ जो है सब को काट कर गिरा दिया जा रहा है ये काम गाँव के लोगो का नही बालके सरकारी लोगो का काम है जो बड़ी बड़ी ईमारतो के निर्माण के लिए हरी भारी जंगल को विरान किये जा रहे है।

उस गाँव मे कई काजू के झाड़ हुआ करते थे लेकिन लोगो का कहना है के वो सब नष्ट होते जा रहे है और अब देखने के लिए मिलते नही नवशें गाँव के पीछे वाले हिस्से मे तो सारे के सारे पेड़ और पहाड़ नष्ट कर दिये गये है और बड़ा सा ईमारत का निर्माण कर दिया गया है। जब पेड़ हि नही बचेंगे तो ठंडक कहा से मिलेगी तभी तो इतनी गर्मी बढ़ चुकी है।



Scanned with OKEN Scanner

सब से बड़ी समस्या की अगर बात की जाए तो वो है मरीना बे जो के नवशें गाँव कै सबसे बड़ी समस्य है और इस मरीना बे के विरुद्ध सारे गाँव वाले है।जब इस मरीना बे की चर्चा हुई तब ना लोगो की अर्ज़ी ली गयी ना मर्ज़ी ,वहा के लोगो का कहना है के सरकरी लोग वहा आते है और अपने काम से आते है और अपना काम कर के चले जाते है किसी को बता ना भी ज़रूरी नही समझते।

अगर एसा हि चलता रहा तो ना हि लोगो की नौकरी जाएगी बालके लोगो को वहा से अपना घर संसार को भी छोड़ कर चले जाना होगा , लेकिन वहा के लोग एसा होने नही देंगे , नवशें मे उनका बचपन गुज़रा है ,उनके पूर्वज रहा करते थे। इसलिए मरीना बे के विरुद्ध सब गाँव वाले है।



Scanned with OKEN Scanner

अगर अन्य समस्या की बात की जाये तो हर छोटे-छोटे गांव में कुछ हो ना हो एक दो छोटा किराने का दुकान जिसमें जरूरत के समान मिलते हो जरूर होते हैं लेकिन नवशें गाँव की बात करे तो इस गाँव में ऐसी एक भी दुकान दूर-दूर तक दिखाई नहीं देति जिस्मे जरुरत् के सामान् उप्लब्द् हो अगर है भी तो एक छोटा दुकान जो बंद है सा बिना  किसी सुविधाओं का ठप हुआ दुकान जहां शायद ही कुछ मिलता हो ।



Scanned with OKEN Scanner

# सुविधा

जब हम गाँव का नाम सुनते है तो हम समझते है के गाँव के लोग बड़े हि संघर्ष जीवन जीते है उनके पास रहने के लिए ,एक जगह से दूसरी जगह जाने मे , रात के अंधेरे मे छोटी सी चिंगारी की मदत से देखना मिट्‌टी वाली चूल्हे मे खाना बना ना ,यह सब मे संघर्ष करते है ।

पर जो नवशें गाँव वह वैसा गाँव नही जो हम समझते है ,

वहा हर सुविधा जैसे आने जाने के लिए गाड़िया सब के पास बड़ी बड़ी गाड़िया है, 24 घंटा पानी की सुविधा बिजली भी अच्छी खासी मिलती है सभी घरों मे , पहले पानी और बिजली की समस्या हुई करती थी लेकिन धीरे धीरे सब की बिजली पानी की समस्या हल् हो गयी ।

लोगों के पास मनोरंजन के लिए मोबाइल भी है जो अच्छे नेटवर्क भी प्राप्त करते है । अब वो जमाना कहा जहा लोग किताबों को पढ़ कर आनंद प्राप्त करते ।



Scanned with OKEN Scanner

जो लोग सरकारी नौकरी करते है , उन्हे सरकार से मिल रही सुविधा के बारेमें ज्ञात हो हि जाता और अन्य लोगो तक भी पोहोच हि जाता है



Scanned with OKEN Scanner

# शिक्षा

शिक्षा समाज को बेहतरी के लिए बदलने में मदद करती **है:** समाज में अलग-अलग मानसिकता वाले विभिन्न प्रकार के लोग होते हैं। ढेर सारे विचारों वाला व्यक्ति समाज, राजनीति और पर्यावरण जैसे विभिन्न विषयों पर चर्चा और विचार-विमर्श कर सकता है।शिक्षा एसी ताकत रखती है के शिक्षा के माध्यम से प्राप्त ज्ञान आपको सही निर्णय लेने और सही रास्ते पर चलने में मदद करने में शक्तिशाली है।

शिक्षा आपको मुद्दों को सुलझाने में मदद करती है समस्याएं हमेशा समाधान के साथ आती हैं, लेकिन उन्हें हल करना हमेशा भ्रमित करने वाला और थकाऊ हो सकता है, जहां शिक्षा मदद करती है। पेह्ले कि जमने मे अगर् कोइ गाँव का व्यकति दसस्वी पास भी होता तो सब से ज़ादा पढ़ा लिखा कह लता था , और लड़कियों को तो उतना पढ़ने का मोका दिया हि नही जाता था लेकिन आज भी गयी गाँव है जो लड़कियों को शिक्षा देने से रोकते है।



Scanned with OKEN Scanner

पर जो नवशें गाँव है वहा के अधिक तर लोग पढ़े लिखे शिक्षित है एक शिक्षित व्यक्ति हर समस्या का समाधान क्यों, क्या और कैसे जैसे प्रश्नों का उत्तर दे सकता है। कई के पास सरकारी नौकरी ,कुछ लॉयर आदि लोग है , और सभी पढ़े लिखे ज्ञानी है।

लेकिन अगर शिक्षा प्राप्त करने के लिये विद्यालय की बात की जाये तो उस गाँव मे एक भी अच्छा विद्यालय नही जहा बच्चे शिक्षा के लिए जा सके , सिर्फ एक बालवाड़ी है जहा कुछ गिने चुने बच्चे जो २-३ है वाही आते है । बकी सिक्षा के लिए वह गाँव से बहार बम्बोलिम जाते है या फिर दोना पाउलो जाते है ,जो के वाह विध्यलय गाँव के बहार पड़ता है ।



Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

# हिंदी भाषा का ज्ञान

भारत विविधताओं से भरा देश है। यहां अलग अलग धर्म व जाति के लोग रहते हैं। अलग अलग भाषाएं, बोलियां बोलने वाले, अलग अलग वेश-भूषा, खानपान व संस्कृति के लोग रहते हैं। ये हिंदी भाषा ही है जो देश के सभी लोगों एकता के सूत्र में पिरोती है। देश को एक रखने में हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है।हिन्दी सिर्फ भाषा या संवाद का ही साधन नहीं है, बल्कि हर भारतीय के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक सेतु भी है। उसी तरह गोवा मे बोली जानी वाली भाषा कोंकणी जकः मुख्यता लोग कोंकणी बोलते है ।

उसी तरह नवशें गाँव  मे भी कोंकणी  बोलते है और रही बात हिंदी भाषा की तो वह हिंदी समझते है और बोल भी लेते है ।पर हिंदी भाषा अभी के नाये पीढ़ी हि बोल और समझ पाते है , जो बुजुर्ग लोग है वह केवल हिंदी थोड़ा बोहत समझ पाते है ,पर बोल नहीं पाते क्यूकि उनकी ज़ुबानी सिर्फ कोंकणी है ।



Scanned with OKEN Scanner

# संस्कृतिक जीवन

संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों, आदि का निर्धारण करता है।

नवशें गाँव का पारम्परिक लोकत्योहार जो है धालो और जागौर

## धालो

यह पाँच दिनों का कार्यक्रम होता है। पहली गॉव के पुरुष मिलकर मांड पर आते है। वहां भग्वान कि पूजा की जाती है।

फिर अपने घर के सामने वाले आनग्न मे खेली जाति है ,इस मे सिर्फ आदमी हि खेलते है और औरते नही ।

## जागर

भगवान का आह्वान करने के बाद, सभी लोक कलाकार और ग्रामीण रात लगभग 10 बजे गांव मांड में आते हैं, जो एक पवित्र सामुदायिक स्थान है और प्रार्थना करते हैं



Scanned with OKEN Scanner

और लोक देवता और अन्य देवताओं से लोक नाटक की सफल प्रस्तुति के लिए अपना आशीर्वाद देने का आग्रह करते हैं।जागोर का प्रदर्शन 'नमन' जैसे भक्ति गीतों के गायन से शुरू होता है जिसमें लोक कलाकार विभिन्न देवी-देवताओं का आह्वान करते हैं। इसके बाद सजे-धजे लोक कलाकारों का आगमन होता है और वे लोक संगीत की धुन पर मंच पर आते हैं।जागोर प्रदर्शन में, पौराणिक कथाओं पर आधारित कोई निश्चित कहानी नहीं है बल्कि दिन-प्रतिदिन की घटनाओं के अनुभवों को सबसे दिलचस्प तरीके से साझा किया जाता है।रात 10 बजे शुरू होने वाला जागोर करीब दस घंटे तक चलता है।

लेकिन इस गाँव मे जागर दो हिस्से मे खेली जाति है ,क्यू कुछ गाँव के लोगो के बीच मतभेद होने के करण यह त्योहार दो हिस्से मे बट गया है । और इसलिए जागर् दो जगह खेली जाति है ।



Scanned with OKEN Scanner

## होली

जय्से हर जगह होली खेली जाति है ,वैसे नवशें गाँव मे भी होली खेली जाति है पर यहा का तरीका कुछ अलग हि ढंग का है ,यहा पे होली रात के समाये खेली जाति है । जहा लोग रात मे पूरे गाँव मे घूम कर होली खेलते है ।

## धार्मिक स्थल

गाँव मे काफी मंदिरे पायी जाति है , जो बोहोत हि खूबसूरत ढ़ंग से निर्माण की गयी है कुछ मंदिर की बनावट सदियों पुरानी की है जो अधिक श्रद्धालु को आकर्षित और मानन को सुख शांति प्रधान करती है।

गाँव के हर घरों का एक खूबसूरत बत यह है के हर घर मे तुलसी पूज के लिए तुलसी झाड का निरामान बड़े आकर्षित् ढंग से किया है जो उनके घरों के आनगन के बिचो बीच है।



Scanned with OKEN Scanner

गाँव मे भले सिर्फ हिन्दु लोग रहते हो पर गाँव मे ईसाइयो का एक क्रॉस भी है जिसका देख भाल् खुद वहा के हिन्दु समाझ करते है ।



Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

## गाओ के लोगो की अपकेक्षाए

जिस तरह से हर समुदाय हर गाँव अपने आप मे एक अलग हि ढंग से उसके रीत ,सस्कृति , भशा , त्योहार उन्हे आकर्षित और प्रभावशील बनाते है वैसे हि नवशें गाँव के लोगो की अपेक्षा है के उनके घर ,उनकी जगह जो वाह बचपन से जीते आ रहे है वाह उनसे ना छीन ली जाये।

और मरीना बे के निर्माण होने से रोक दीय जाये , क्यू की उसकी जीवन सब कुछ उसी गाँव मे बस्ती है , वहा का व्यवसाय जो मच्छी पकड़ने की , वहा की संस्कृति ,वहा का त्यौहारो को नष्ट ना कर के उन्हे आगे बढ़ाय जाये ।

अगर उन्हे उस गाँव से निकाल दिया जायेगा तो उनके पास कोई दूसरी जगह नही अपना बसेरा करने के लिए कर पेट भरने के लिए

अपने आने वाले पीढ़ी को बताये के कितना अलग गाँव है उनका।

ना हि केवल उन्हे अपने गाँव को बचाना है बालके वहा फल रहे पेड़ पौधों को भी बचाना है जो दिन बदिन काट दिये जा रहे है।



Scanned with OKEN Scanner

गाँव मे अन्य सेवा जैसे की शिक्षा के लिए विद्यालाय की भी बोहोत जरूरत है । वहा के छोटे बच्चो के लिए आंगनवाडी है पर उतने बच्चे नही जितने होने छाहिए ।

यही गाँव उनका सब कुछ है।



Scanned with OKEN Scanner

## निष्कर्ष

इस प्रकार हमने नवशें गाँव को जाना ,समझा और बोहोत कुछ सिखने के लिए प्राप्त हुआ । और इस तरह हुमने सर्वेक्षण पुरा किया है। इतने खूबसूरत गाँव का सिर्फ आज तक सिर्फ नाम सुनाई देता था पर अब हमने वहा के संस्कृति वहा के लोग से मिल कर उस गाँव को बड़े हि अच्छे ढंग से मेहसूस भी किया ।

किताबों की दुन्या से बाहर आ कर एक नये तरह का शिक्षा मिली, हमारा आत्माविश्वास जगह , और अपने गोवा के यह छोटे गाँव जो नदी किनारे बसे लोगो के रेहेन सहन का हमें ज्ञात हुआ । इससे हमारे खुद के अन्दर एक चेतना जागरूत हुई की कैसे हमारे लोकसान्स्क्रुति को हमें बचाना और संभाल के रखना चाहिए ।



Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner